भूमिका दामू की

रचनाकार:- नरेंद्र जाधव

गतिविधि:-

वेब-साईट के आधार पर नरेंद्र जाधव जी के बारे में जाने

प्रस्तावना:

नरेंद्र जाधव जी के बारे में इतना जान लेने के बाद आप के मन में आवश्य यह ख्याल आता होगा कि इस व्यक्ति का बचपन काफी सघनता से बीता होगा | परन्तु बच्चों इन्हें अपने बचपन से काफी संकटों का सामना करना पड़ा | उनका संघर्ष ... जातिव्यवस्था, निरक्षरता, अज्ञान, अंधविश्वास और गरीबी के विरोध में था |

उनके इसी संघर्ष की कथा है उनका आत्म-चरित्र "आमचा बाप आणि आम्ही".....

उसी पुस्तक के हिन्दी अनुवाद "असीम है आसमाँ" का यह एक अंश है........

पाठ का आरंभ:

१.

१९४८ की जुलाई का महीना ... दामू अपने बटे के दाखिले के लिए एक बड़े स्कूल के दरवाज़े पर खड़ा है......

दामू के कपड़ों को देखकर दरबान उसे अंदर जाने से मना करता है.... पर दरबान के हाथ में जैसे-तैसे पैसे टिकाकर दामू स्कूल में प्रवेश तो पा जाता है.....

२.

चौकीदार के बताए मार्ग से दामू हेडमास्टर के कमरे तक पहुँच दरवाज़ा.... जब खटखटाने पर भी कोई उत्तर नहीं मिला तो दामू ने दरवाज़ा धकेला....

... दामू की घोर निराशा हुई क्योंकि हेडमास्टर ने उत्तर दिया... "इस स्कूल में दाखिलों का काम मई महीने तक पूरा हो जाता है और शिक्षा का वर्ष जून के महीने से शुरू हो जाता है | अब हमारे यहाँ कोई दाखिला नहीं हो सकता है | तुम अगले वर्ष मई के महीने में दाखिला लेने की कोशिश करो |"

३.

दामू इन सब नित्मों के बारे में जानता ही नहीं था वह काफी गिडगिडाया, उसने कहा, "साहब आप कृपआ देखिए, मेरा बच्चा बुध्दिमान है | आप जो भी कहेंगे वह जरुर करेगा |"

पर हेडमास्टर जी दामू पर गुस्सा हुए और उसे वहाँ से जाने के लिए कहा |

४.

.... पर दामू के कानों में बाबासाहेब आंबेडकर की दलितों से कही एक बात गूँज रही थी, “आप अपने बच्चों को शिक्षित बनाओ | एक प्रतिष्ठापूर्ण जीवन पाने का एक ही मार्ग है –“शिक्षा |”

......और दामू हेडमास्टर के सामने साष्टांग लेट गया,और कहने लगा कि मैं यहाँ से कतई नहीं जाने वाला... अपने बच्चे का दाखिला दिए बिना में यहाँ से हिलने नहीं वाला ....

पहले तो हेडमास्टर को गुस्सा आया.. पर दामू की लगन देखकर उन्होंने दामू से कहा कि कल बच्चे को ले आना...

५.

खुशी के मारे दामू रात-भर सो न सका.... सुबह तड़के वह अपने बच्चे को लेकर स्कूल पहुँच गया....

औपचारिकताओं को पूरा करने के बाद हेडमास्टर जी ने क्लर्क के साथ बच्चे को क्लास रूम में रवाना किया | दामू भी उठकर चल दिया | अपने बेटे को क्लास रूम में बैठते हुए देखकर उसके मन को काफी सुकून मिला और वह निश्चिन्त हो गया |

६.

यह कहानी है नरेंद्र जाधव और उनके पिता की........नरेंद्र जाधव दलित समाज के ऐसे ही पहरुआ हैं, जो हर वक्त वंचित समाज को उसका अधिकार दिलाने के लिए लड़ रहे हैं. चाहे पुणे विश्वविद्यालय का कुलपति पद हो, रिजर्व बैंक में 31 साल तक पॉलिसी मेकर का काम हो, या फिर वर्तमान में योजना आयोग और राष्ट्रीय सलाहकार परिषद के सदस्य जैसी अहम जिम्मेदारी, शिक्षाविद एवं प्रसिद्ध अर्थशास्त्री जाधव जिस भूमिका में भी रहे दलितों के हित ढूंढ़ते रहे.

इस कहानी में वर्णित दामू नरेंद्र जाधव जी के पिता “दामोदर रुन्जाजी जाधव” है और जिस बच्चे के दाखिले की बात हो रही है वह बच्चा उनका बड़ा लड़का “जनार्दन जाधव” है |

अपन होशियारी के बल-बूते पर जनार्दन जाधव जी ने IAS की परीक्षा उत्तीर्ण की और मुंबई महानगरपालिका के कमिश्नर बन गए |

नरेंद्र अपने बड़े भाई से काफी प्रभावित थे और उन्हीं के प्रोत्साहन से वे इतनी प्रगति कर पाए.....

७.

यह घटना नरेंद्र जाधव जी द्वारा लिखित पुस्तक “आमचा बाप आणि आम्ही” इस किताब से ली गई है |

इस किताब के निर्माण की रोचक कहानी बताते हुए जाधव जी कहते हैं कि, “ नौकरी से अवकाश ग्रहण करने के बाद पिताजी के पास काफी समय रहता था... उस समय का सदुपयोग थे यह किताब....”

१९८९ में उनके पिताजी की मृत्यु के बाद उनके द्वारा लिखी कच्ची-पक्की, संगत-असंगत डायरियों को दोबारा एक आकार देकर इस पुस्तक का निर्माण किया गया....

इस पुस्तक का गुजराती,कन्नड़,उर्दू और पंजाबी इन भारतीय भाषाओं में ही अनुवाद नहीं हुआ है अपितु फ्रेंच,अंग्रेजी और स्पेनिश जैसी विदेशी भाषाओं में अनुवाद हुआ है |

८.

अपने पिता को याद करते हुए नरेंद्र जाधव जी कहते हैं, “ पिताजी डा.बाबासाहेब आंबेडकर के विचारों से प्रभावित थे|

- नेता नहीं होने के बावजूद उन्होंने अपने-आप को परिस्थिति का शिकार नहीं हों दिया |
- गुरु नहीं होने के बावजूद उह्नोंने पाने बच्चों को खुद पर भरोसा करना सीखाया |
- वे स्वयं अत्यंत विनम्र स्वभाव के थे, पर उन्होंनेकहा कि बली हमेशा बकरों की चढ़ती है, शेरों की नहीं...
- वे साधारण व्यक्ति थे पर उन्होंने असाधारण काम किया | वे जातिव्यवस्था के विरोध में खड़े हुए.....

९.

जातिव्यवस्था हम भारतीयों के लिए शाप है...

१९५० में भारतीय संविधान ने छुआछूत पर प्रतिबन्ध लगा दिया, उस समय अछूतों को दलित कहा जाने लगा| आज भारत मे दलितों की आबादी साढ़े सोलह करोड़ के आस-पास है, जो ब्रिटेन तथा फ़्रांस से तीन गुना, जर्मनी के दो गुना, अमेरिका की दो-तिहाई आबादी से थोड़ा ही कम है |

दलित समाज अब सदियों की ऊँघ से जाग रहा है | मानवजाति का यह समुदाय मानवीय अस्मिता की तलाश और संघर्ष में है | इस तलाश और संघर्ष में उसके अथियार होंगे – शिक्षा, सशक्तिकरण और लोकतंत्र |

असीम है आसमाँ ऐसे ही एक परिवार की कहानी है, जिसने लगातार जातिव्यवस्था, निरक्षरता, अज्ञान, अंधविश्वास और गरीबी के विरोध में संघर्ष किया है |

उद्देश्य.

बच्चो, सोचिए आप कोई एसी गाडी चला रहें हैं जिसके चार पहिए हैं... आगे के दो ही पहिए चल रहे हैं, पीछे के दो नहीं.... क्या एसी परिस्थिति में आपकी गाडी आगे जा पाएगी?

इसका उत्तर आप एक झटके से देंगे, “नहीं बिलकुल नहीं”

अब, सोचो तो हमारा देश भी इसी गाडी की तरह है... हम सबको मिलकर आगे जाना है... अगर कोई एक समुदाय या जाति पीछे रह गई तो क्या हमारा देश प्रगति कर पाएगा?

बच्चो, इस पाठ के मुख्य रूप से दो उद्देश्य हैं:-

- हम जातिव्यवस्था से उपर उठकर देश की प्रगति के बारे में सोचे
- कितनी भी मुसीबतें क्यों न आएँ हम अपनी हिम्मत न हारें.. कठिनाई के समय खुद ही को खुद का मार्गदर्शक या दीपस्तंभ बनाए
- सिर्फ अपनी ही नहीं अन्य जातियों की प्रगति को भी अपना ध्येय रखें
- अपनी शिक्षा का उपयोग दूसरों की भलाई के लिए करें

पुष्टि-धन.

http://www.biography.com/people/george-washington-carver-9240299

जार्ज वाशिंगटन कार्व्हर की कहानी.....

मूल्यांकन के लिए प्रश्न:-

१. दामू क्या चाहता था?
    अ. अपने बच्चे को अच्छे कपड़े दिलाना चाहता था
    आ. अपने बच्चे को होटल में ले जाना चाहता था
    इ. अपने बच्चे का दाखिला अच्छे स्कूल में करवाना चाहता था
    ई. अपने बच्चे को अच्छे कपड़े दिलवाना चाहता था
२. दामू के अनुसार प्रतिष्ठापूर्ण जीवन पाने का एकहीमार्ग कौनसा है?
    अ. शिक्षा
    आ. पैसा
    इ. प्रसिध्द होना
    ई. कुछ बड़ा काम करना
३. भारत का कलंक क्या है?
    अ. गरीबी
    आ. ३५०० वर्ष पुरानी जातिव्यवस्था
    इ. अशिक्षा
    ई. अंधविश्वास
४. दलित समाज के संघर्ष में उनके हाथियार क्या होंगे?
    अ. शिक्षा, सशक्तिकरण और लोकतंत्र
    आ. तोप और बंदूके
    इ. आन्दोलन करना
    ई. लोकों को मरना

worksheet:-

१. दामू अपने बच्चों को क्यों पढ़ाना चाहता था?
२. दामू को हेडमास्टर ने क्या उत्तर दिया?
३. अपने बच्चे को दाखिला मिले इसलिए दामू ने क्या किया? अपने शब्दों में लिखें|
४. यह कहानी किस प्रसिध्द व्यक्ति के जीवन से संबंधित है?
५. पुस्तक निर्माण की कहानी का वर्णन अपने शब्दों में करें|

६. दामू किस महँ नेता के कार्नप्रभावित हुए थे?

७. ‘असीम है आसामं’ किसकी कहानी है?

८. आपने अनुसार दलितों के उद्धार के लिए क्या करना चाहिए|